उन्मुक्त आकाश के नीचे कैस्ट्रो कैफे

नायाब वास्तु

दिसंबर 2005 में कैस्ट्रो कैफे की रूपरेखा किस तरह तैयार की गई थी मुझे अभी तक भली-भांति याद है। 'रोमी खोसला डिजाइन स्टूडियो' की पहली कुछ बिल्डिंग्स में से एक यह कैफे मेरे दिल के बहुत करीब रहा है। एक तो इसलिए कि यह सिर्फ दूसरी या तीसरी बिल्डिंग थी जिसे मैं डिजाइन कर रहा था। दूसरी बात यह थी कि यह एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के परिसर में बनाया जाना था। विद्यार्थियों के दिल में कोई चीज उतारनी हो तो उसे एक विद्यार्थी के तौर पर ही सोचना और तैयार करना होता है। इसलिए एक विद्यार्थी की तरह मैंने सोचना शुरू किया और अनुभव किया कि अगर मैं इस विश्वविद्यालय का छात्र होता और उन्मुक्त

परिसर में कोई कैंटीन की कल्पना करता तो कैसा दिखता। उसके बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि कैंटीन सिर्फ खान-पान के लिए ही नहीं, बल्कि अध्ययन और सुकून के कुछ पल बिताने के भी अनुकूल हो।

दिल्ली के तापमान का रखा ध्यान: कैफे डिजाइन करते वक्त दिल्ली के तापमान को भी ध्यान में रखना था, क्योंकि यहां गर्मी प्रचंड रूप में रहती है तो सर्दी भी हाड़ कपा देने वाली होती है। मेरे ध्यान में यह

आर्किटेक्ट मार्तंड खोसला

भी था कि देश के अधिकतर छात्र कैफे वातानुकूलित नहीं हैं। अधिकांश जगहों पर वेंटिलेशन भी ऐसा होता है कि दोनों ही मौसम में विद्यार्थियों को परेशानी होती है। इसलिए हमने 'सेमी ओपन एयर कैफे' के बारे में सोचा ताकि पूरे साल तापमान को सामान्य रखा जा सके। वेंटिलेशन के साथ-साथ शेड भी इस तरह से डिजाइन किया कि बिना एयर कंडिशन के भी कैफे का भीतरी परिसर ठंडा रहे। डिजाइन अपने आप में अनूठा था और संभवतः किसी भी छात्र कैफे में इस तरह का प्रयोग पहली बार हुआ था।

पकाने से लेकर खाने की जगह तक में शिल्प कला : डिजाइन के समय हमें इस बात का भी विशेष ध्यान रखना था कि कम जगह में अधिक से अधिक विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त कैफे का निर्माण होना है। इसलिए कुकिंग स्पेस से लेकर इटिंग स्पेस तक में डिजाइन के वक्त कई प्रयोग किए गए। 890 स्क्वायर मीटर के निर्माण क्षेत्र में बिल्डिंग ब्लॉक के पूर्वी ओर किचन के लिए 71 स्क्वायर मीटर को तीन तरफ से बंद रखा गया। पश्चिम ओर से प्रवेश करने पर दक्षिण ओर की बैठने योग्य क्षेत्र को पूरी तरह दीवार और छत से ढक दिया गया, वहीं उत्तरी ओर आधे हिस्से में ही दीवार खड़ी की गई। कैफे की दीवारें छत को नहीं छूती हैं और छत का जमीन से कोई जुड़ाव नहीं है, लेकिन देखने के बाद आपको ऐसा लगेगा जैसे कैफे का सारा हिस्सा एक साथ जुड़ा हुआ है।

हंस राज से बातचीत पर आधारित